६. अंधायुग

– डॉ. धर्मवीर भारती

युयुत्सु : होती होगी वधिकों की मुक्ति
प्रभु के मरण से
किंतु रक्षा कैसे होगी अंधे युग में
मानव भविष्य की
प्रभु के इस कायर मरण के बाद ?

अश्वत्थामा : कायर मरण ?
मेरा था शत्रु वह
लेकिन कहूँगा मैं
दिव्य शांति छाई थी
उसके स्वर्ण मस्तक पर !

वृद्ध : बोले अवसान के क्षणों में प्रभु –
''मरण नहीं है ओ व्याध !
मात्र रूपांतरण है यह
सबका दायित्व लिया मैंने अपने ऊपर
अपना दायित्व सौंप जाता हूँ मैं सबको
अब तक मानव भविष्य को मैं जिलाता था
लेकिन इस अंधे युग में मेरा एक अंश
निष्क्रिय रहेगा, आत्मघाती रहेगा
और विगलित रहेगा
संजय, युयुत्सु, अश्वत्थामा की भाँति
क्योंकि इनका दायित्व लिया है मैंने !''

बोले वे –
''लेकिन शेष मेरा दायित्व लेंगे
बाकी सभी ....

परिचय

जन्म : १९२६, इलाहाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : १९९७, मुंबई (महाराष्ट्र)
परिचय : भारती जी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि नाटककार और सामाजिक विचारक थे । आपको १९७२ में पद्मश्री से सम्मानित किया गया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'स्वर्ग और पृथ्वी', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बंद गली का आखिरी मकान', 'ठंडा लोहा', 'सातगीत', 'कनुप्रिया', 'सपना अभी भी', 'गुनाहों का देवता', 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'ग्यारह सपनों का देश', 'पश्यंती', 'अंधायुग' आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत अंश डॉ. धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' गीतिनाट्य से लिया गया है । इसमें युद्ध के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक जीवन की विभीषिका का चित्रण किया गया है । अंधायुग में युद्ध तथा उसके बाद की समस्याओं और मानवीय महत्त्वाकांक्षा को प्रस्तुत किया गया है । यह दृश्य काव्य है । इसका कथानक महाभारत युद्ध के समाप्ति काल से शुरु होता है ।

यहाँ प्रसंग उस समय का है जब श्रीकृष्ण की जीवनयात्रा समाप्त हो गई है । डॉ. भारती जी वृद्ध के मुख से कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने अपना संपूर्ण उत्तरदायित्व पृथ्वी के हर प्राणी को सौंप दिया है । सभी को अपने मर्यादायुक्त आचरण, सृजन, साहस-निर्भयता एवं ममत्वपूर्ण व्यवहार करने होंगे । मानव-जीवन उसके ही हाथों में है । वह चाहे तो उसे नष्ट कर दे अथवा जीवन प्रदान करें ।

मेरा दायित्व वह स्थित रहेगा
हर मानव मन के उस वृत्त में
जिसके सहारे वह
सभी परिस्थितियों का अतिक्रमण करते हुए
नूतन निर्माण करेगा पिछले ध्वंसों पर !
मर्यादायुक्त आचरण में
नित नूतन सृजन में
निर्भयता के
साहस के
ममता के
रस के
क्षण में
जीवित और सक्रिय हो उठूँगा मैं बार-बार !''

अश्वत्थामा : उसके इस नये अर्थ में
क्या हर छोटे-से-छोटा व्यक्ति
विकृत, अद्‌र्धबर्बर, आत्मघाती, अनास्थामय
अपने जीवन की सार्थकता पा जाएगा ?

वृद्‌ध : निश्चय ही !
वे हैं भविष्य
किंतु हाथ में तुम्हारे हैं ।
जिस क्षण चाहो उनको नष्ट करो
जिस क्षण चाहो उनको जीवन दो, जीवन लो ।

—o—

कल्पना पल्लवन

'मनुष्य का भविष्य उसके हाथों में है' अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

वधिक = वध करने वाला
कायर = डरपोक
ध्वंस = विनाश
सृजन = निर्माण
बर्बर = असभ्य, हिंसक
आत्मघाती = आत्महत्या करने वाला

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) कृति करो :

१. [ ] — वृद्ध ने इनका दायित्व लिया है — [ ]

२. [ ] — अंधे युग में प्रभु का एक अंश — [ ]

(२) संजाल पूर्ण करो :

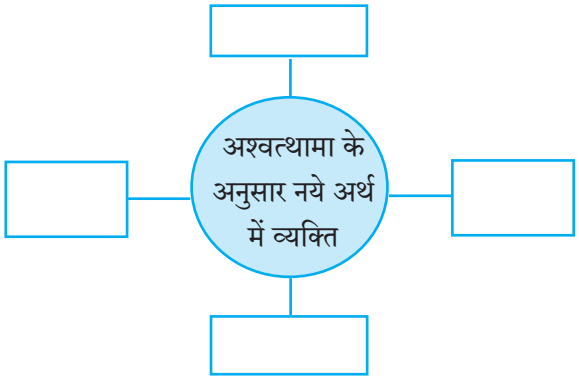

(३) उत्तर लिखो :

कविता में प्रयुक्त पात्र —

भाषा बिंदु

१. पाठों में आए मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अपने स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो :

२. पढ़ो और समझो :

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
मानवीय	म्+आ+न्+अ+व्+ई+य्+अ	वाक्य	----------
सहायता	स्+अ+ह्+आ+य्+अ+त्+आ	शब्द	----------
मृदुल	म्+ऋ+द्+उ+ल्+अ	व्यवहार	----------

J19ZYY

स्वयं अध्ययन

'कर्म ही पूजा है', विषय पर अपने विचार सौ शब्दों में लिखो ।

मैंने समझा

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दो ।

एक गाँव — दर्जी की दुकान — प्रतिदिन हाथी का दुकान से होकर नदी पर नहाने जाना — दर्जी का हाथी को केला खिलाना

एक दिन दर्जी को मजाक सूझना — दर्जी द्वारा हाथी को सुई चुभाना — परिणाम — शीर्षक